जनसत्ता २८ नवंबर, २००६

खुदकुशी की खाड़ी

मनोज कृष्ण

खाड़ी देशों में भारतीय कामगारों की दिन-ब-दिन बढ़ती आत्महत्या की घटनाएं इन दिनों सुर्खियों में हैं। देखा जाए तो एक तरह से यह नितांत वैयक्तिक मामला है, लेकिन कुछ समान परिस्थितियों में जब ये घटनाएं बार-बार दुहराई जाने लगें तो स्थिति की भयावहता का अंदाजा अपने आप लग जाता है। सऊदी अरब की राजधानी रियाद में भारतीय दूतावास के समुदाय कल्याण विभाग की ओर से जारी आंकड़ों पर विश्वास करें तो पता चलता है कि इस साल के शुरुआती आठ महीनों में अप्राकृतिक मौत के सिर्फ यहीं तीन सौ तीन मामले सामने आए। इसके तहत मरने वाले भारतीय नागरिकों की संख्या करीब साढ़े पांच सौ थी। ये आंकड़े अकेले सउदी अरब के हैं। इस आधार पर पूरे खाड़ी देशों में भारतीय मूल के लोगों की स्थिति का अंदाजा अपने-आप लग जाता है।

इन देशों में अपनी किस्मत की चाबी ढूंढने निकले भारतीय मूल के लोगों की दीन-हीन दशा के किस्से क्षेत्र के सभी देशों में कमोबेश एक जैसे हैं। रियाद के भारतीय दूतावास के एक कर्मी के मुताबिक दूतावास में हर महीने वीजा चोरी किए जाने, बंधक बनाने या फिर तय शर्तों के मुताबिक काम न दिए जाने के तकरीबन पचास से ज्यादा मामले सामने आते हैं। आलम यह है कि इन देशों के एजेंट डॉक्टर, इंजीनियर, सूचना तकनीशियन और नर्स जैसे पेशों से जुड़े लोगों से भी बदसलूकी करने से बाज नहीं आते, जबकि हकीकत में इन पेशेवरों की देश में बेहद जरूरत होती है।

एक डॉक्टर का जिक्र करते हुए एक दूतावास कर्मी ने बताया कि अच्छी तनख्वाह का लालच देकर उसे एजेंट ने यमन बुलाया। वहां जाने के बाद उसे चरवाहे की नौकरी का प्रस्ताव दिया गया। उसने मना कर दिया और दूतावास में शिकायत दर्ज कराई। कई दिन की मशक्कत के बाद जब घर वालों ने तय रकम मंत्रालय के खाते में जमा करा दी तभी उसे स्वदेश भेजा जा सका। यहां पढ़े-लिखे होने और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने के नाते एक डॉक्टर ने आवाज उठाई और उसे मुक्ति मिल गई, जबकि ज्यादातर कामगार कम पढ़े-लिखे होने के कारण अत्याचार को अपनी नियति मान बैठते हैं। लिहाजा, वे घुट-घुट कर जीने को मजबूर होते हैं।

शोषण के तरीकों में तयशुदा वेतन या काम न दिया जाना, पासपोर्ट जब्त कर लेना, बंधक बना लेना, खराब सेवा शर्तें, काम के बदले भोजन या स्वास्थ्य सुविधाएं न मुहैया कराना, बेवजह मारपीट जैसी घटनाएं शामिल हैं। और तो और, नर्स या आया की नौकरी के लिए बुलाई गई दक्षिण भारत की कई महिलाओं को देहव्यापार जैसे धंधे में प्रदेशों में समान रूप से है। यही वजह है कि जगह-जगह इन देशों को भेजने वाले एजेंटों ने अपना जाल फैला रखा है।

बड़े-बड़े सब्जबाग और मोटी तनख्वाह का लालच देकर ये लोगों को खाड़ी देश भेजते हैं। आम आदमी में इन देशों में जाने की ललक का पता इसी से लग जाता है कि यहां सालाना पैंतीस लाख भारतीय पलायन कर पहुंचते हैं जिनमें अकेले सउदी अरब में पंद्रह लाख लोग आते हैं जो किसी भी अन्य खाड़ी देश की तुलना में सबसे अधिक हैं। इनमें ज्यादातर विभिन्न क्षेत्रों के कुशल कारीगर मसलन दर्जी, मैकेनिक, घरेलू नौकर, आया, कॉरपेंटर आदि होते हैं। इन कार्यों में अधिक शैक्षणिक योग्यता की आवश्यकता नहीं होती है।

देश में ये लोग ऐसे वर्ग से आते हैं, जिसे अपेक्षया गरीब तबका कहा जाता है। इनकी माली हालत इतनी अच्छी नहीं होती कि विदेश जाकर नौकरी कर सकें। बावजूद इसके, पैसे का सम्मोहन और अमीर बनने की महत्त्वाकांक्षा इन्हें अपना घर-बार छोड़ने को मजबूर कर देती है। इसके लिए धन जुटाने में वे किसी भी हद तक जा सकते हैं, जिसमें खेत-घर या जेवर गिरवी रखना, कर्ज लेना, जमीन बेचना आदि शामिल हैं। नियम-कानून की जानकारी न होने की वजह से ज्यादातर मामलों में बिचौलिए इन्हें बगैर वैध वीजा के ही बाहर भेज देते हैं। वहां पहुंच कर इस खामी का लाभ अरबी लोग उठाते हैं। वह पुलिस को सौंप देने का डर दिखा कर उन्हें बंधक बना लेते हैं और मनमाने वेतन या फिर बिना वेतन के ही उनसे हाड़तोड़ मेहनत कराते हैं। उनके साथ तय शर्तों के मुताबिक बर्ताव नहीं किया जाता। लिहाजा, वेतन न मिलने, नौकरी में उत्पीड़न और पारिवारिक समस्याओं की वजह से वे अतिशय तनाव में जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं जिसकी अंतिम परिणति कभी-कभी आत्महत्या के रूप में सामने आती है।

इसी तरह का मामला हाल ही में बहरीन में नजर आया जहां एक मालिक ने अपने भारतीय दर्जी को महज इसलिए बंधक बना लिया कि कहीं वह भाग न जाए। मामला पुलिस के पास गया तब जाकर उसकी रिहाई का रास्ता खुल सका। इसी तरह एक बीमार श्रमिक पर भागने के जुर्म में मुकदमा दर्ज किया गया। मुकदमा वापस लेने के लिए उसके मालिक ने घूस के तौर पर छह सौ बहरीन डॉलर लिए। इसी मुकदमे के चलते उस श्रमिक को चार साल और वहां रुकना पड़ा।

खाड़ी देशों में उत्पीड़न के शिकार ज्यादातर भारतीय कामगार आगे कुआं और पीछे खाई के बीच फंस कर इसे अपनी नियति मान कर बर्दाश्त कर लेते हैं। जापनी के पैसे जुटाने की गरज से वे हर कीमत पर काम करने को मजबूर हो जाते हैं, लेकिन जब तक उसे स्थिति का सही अंदाजा लग पाता है, बहुत देर हो चुकी होती है। तब हर तरफ से